ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Receivedon 18th Oct 2017, **Revised** on 25th Oct 2017; **Accepted** 28th Oct 2017

आलेख

आदर्श आचार्य

डॉ.अमिता आर यादव, प्राधानाचार्या
प्रार्थना विद्यालय,भरूच, गुजरात
Email ID: amitaravindra@gmail.com, Mobile No.: 9879639597

मुख्य शब्द – *राजपुत्र श्रीकृष्ण, घनुर्विद्या, गुरु दक्षिणा आदि*

पृथ्वी पर मानव सभ्यता का विकास येनकेन प्रकाणेन तो नहीं हुआ होगा । हर समाज मे कोई न कोई श्रेष्ठ बुद्धिजीवी पैदा हुआ होगा जिसने समाज को दिशा व दशा दी होगी। ऐसे महापुरुषो को लोगो ने आचार्य, गुरु व शिक्षक की संज्ञा दी होगी। इसलिए समाज ने उन्हें देव तुल्य माना और इनमें घनिष्टता बनी। प्रजापति ने तो पृथ्वी पर मानव व जैविक पदार्थो की रचना की किन्तु मानव को शिक्षित कर सजाया-संवारा इन महान विभूतियों ने।एसेही कुछ आचार्यो, गुरुओं का उल्लेख करना मैं उचित समझती हुँ।

१) गुरु सांदीपनी: - एक ऐसे आचार्य थे जिनके आश्रम में जाकर राजपुत्र श्रीकृष्ण और सामान्य ब्राह्मण पुत्र सुदामा साथ साथ वेद शास्त्र , योगशास्त्र व शस्त्र विद्या का अध्ययन किए। उस आश्रम में कोई भेदभाव नहीं था। गुरु माता की आज्ञा से जंगल में लकडी इकठ्ठा करने जाते थे। विद्याध्ययन के साथ साथ सभी छोटे बडे कार्य स्वयं करते थे। गरु समान दृष्टि से दोनों को हर प्रकार की शिक्षा देते थे। उनमें समदर्शी की भावना थी । यही गुण हर शिक्षक में होना चाहिए।

२) गुरु द्रोणाचार्य: - एक ऐसे गुरु थे जिन्होने राजकुमारों को ही शिक्षा देने की शपथ ली थी। हस्तिनापुर के राजकुमारों पाण्डव और कौरवों को ही शिक्षा देते थे। एक बार कर्ण जो सूतपुत्र के रुप मे पहचाने जाते थे, शिक्षा देने के उद्देश से गुरुद्रोण के आश्रम पहुँचे और अनुनय विनय की , उन्हें भी अन्य राजकुमारों की भाँति घनुर्विद्या की शिक्षा दी जाय। इस पर द्रोणाचार्य जी ने शिक्षा न देने के साथ- साथ सूतपुत्र कहकर उनका तिरस्कार भी किया। ऐसी ही घटना एकलव्य के साथ हुई। उन्होंने विद्याध्ययन करवाने से मना कर दिया। एकलव्य भी दृढप्रतिज्ञ व्यक्ति थे। उन्होंने वापस जाकर अपने घर घनुर्विद्या का अम्यास प्रारभ्भ कर दिया और एक महान घनुर्धर बने। एक बार गुरु द्रोणाचार्य एकलव्य के घनुर्विद्या से बहुत प्रभावित हुए और कितने उसे यह धनुर्विधा सिखाई। उसने कहा आपने द्रोणाचार्य अर्जुन को श्रेष्ठ घनुर्घ बनाना चाहते थे अतएव एकलव्य को मात करने के लिए उसके दाहिने हाथ का अंगुठा गुरु दक्षिणा में मांगा जिसे एकलव्य ने अविलम्ब काटकर द्रोणाचार्य के चरणों में रख दिया। इन कार्यकलापों से द्रोणाचार्य में आदर्श आचार्य की भूमिका पर प्रश्न चिन्ह तो लगता ही है।

३) आचार्य चाणक्य :- इसी प्रकार ३७५ वर्ष ईसा पूर्व, पंजाब में जन्में आचार्य चाणक्य जिन्होने अपने बुद्धि कौशल से भारत में नंदवंश का नाश कर, चन्द्र गुप्त मौर्य को राजा बनाकर मौर्य वंश की स्थापना की वे तक्षशिला विश्वविद्यालय के प्रधानाचार्य थे। आचार्य चाणक्य ने

कहा है कि शिक्षक महान होता है – प्रलय व निर्माण उसकी गोद में पलते है। किसी भी समाज व राष्ट्र की उन्नति उस देश के आदर्श , सुयोग्य तथा चरित्रवान शिक्षक पर निर्भर करता हे। नि:स्वार्थ सेवा व कर्तव्य परायणता शिक्षक के उच्च गुण हैं।

४) कोबायाशी:– आधुनिक युग के विचारक और जापान के तोमोए पाठशाला के आचार्य श्री कोबायाशी की शिक्षा पद्धति आरुढ और कल्पनाशील थी। उनका मानना था कि बच्चे मूल स्वभाव से तो अच्छे ही होते है किन्तु उसके बाद बाहर के वातावरण और बडों का व्यवहार योग्य न हो तो अच्छेपन को नुकशान करता है। इसलिए उनका ध्येय था कि अच्छे स्वभाव को संभालकर विकसित किया जाए तो बालक सबके बीच में अपनी विशेष प्रतिभा के साथ विकसित होता है। तोमेय एक ऐसी स्कूल थी जहाँ बच्चे स्कूल के समय उपरांत भी घर जाने का नाम नहीं लेते थे। सुबह उठकर बच्चे स्कूल जाने को उत्सुक रहते थे आचार्य कोबायाशी यह मानते थे कि प्राथमिक शिक्षा ही बालक के शिक्षा का उच्च अवसर है। अपनी पाठशाला में प्रत्येक कक्षा में कम ही विद्याथियों की संख्या रखते थे और मुक्त अभ्यासक्रम के आग्रही थे। जिससे प्रत्येक बच्चे का आत्मविश्वास दृढ होता था। सुबह के समय पढाने का कार्य होता था और दोपहर के बाद चित्र बनाना, गीत–संगीत और प्रधानाध्यापक की चर्चा में भाग लेना जैसे रचनात्मक कार्य किये जाते थे। तोमेय स्कूल के बच्चों को किसी के दिवाल पर या रोड पर पेंसिल या चाक से लिखने या चित्रित करने या दीवाल पर गंदे करने की आदत नही थी क्योंकि चाक से लिखने या चित्र बनाने की इच्छा स्कूल में ही पूर्ण हो जाती थी ऐसी व्यवस्था की गई थी। इस प्रकार श्री कोबायाशी ने बच्चों का स्नेह जीता था। जो कि एक आदर्श आचार्य की भूमिका प्रस्तुत करती है।

५) ए.एस.नील :– "समरहिल" के आचार्य एलेक्जेन्डर सदरलेन्ड नील की शिक्षा प्रणाली बालक के लालन पालन का क्राँतिकारी तरीका है। क्योंकि वह भयमुक्त शिक्षा के सच्चे सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करती है। समरहिल की शिक्षा में सिर्फ बौद्धिक विकास पर्याप्त है । उसके साथ भावनात्मक विकास भी हो यह जरुरी है। वास्तव में नील बच्चो को ऐसी शिक्षा नहीं देना चाहते कि बच्चा मौजूदा व्यवस्था में फिट हो जाये, बल्कि उनका प्रयास बच्चों को ऐसे पालने पोषने का है जिससे वह प्रसन्न इन्सान बन पाये। वे ऐसे पुरुष बने जिनके मूल्य अधिक पाने अधिक उपभोग करने के बदले स्वंय कुछ कर दिखाने में सक्षम हो। नील यर्थावादी है यह वह देख सकते हैं कि जिन बच्चों को वह शिक्षित कर रहे है वे संभवत: दुनियायी अर्थ में अधिक सफल और सिद्ध न हो फिर पर भी उनमें सच्ची निष्कपटता विकसित होगी, जो उन्हें बेइमान या मूर्ख भिखारी बनने से बचायेगी। ऐसी उच्च सोच के अनुरूप आचार्य नील ने शिक्षा दी जिससे समाज में योग्य नागरिकता का निर्माण हो सके।

ऊपरोक्त आचार्यो की भूमिका जानने के बाद इतना कहा जा सकता है कि हमें किस प्रकार के आचार्य बनाना है इस बारे मे सबका अपना व्यक्तिगत मत हो सकता है। लेकिन अगर समाज और देश को अच्छा नागरिक प्रदान करना हो तो आचार्य को पूर्वग्रहरहित, पक्षपातविहीन, और निष्ठापूर्वक अपने दायित्व को निभाना चाहिए।इस कार्य को करने में विध्न कई प्रकार के आयेंगे लेकिन उसका डटकर सामना कर येनकेन प्रकाणेन उन कठिनाईओं को पचाकर एक उज्जवल भविष्य इन छात्रो को मिल पाये तो सही अर्थ में समाज को एक आदर्श आचार्य मिल जायेगा।

*** Corresponding Author:**
डॉ.अमिता आर यादव, प्राधानाचार्या
प्रार्थना विद्यालय, भरूच, गुजरात
Email ID: amitaravindra@gmail.com, Mobile No.: 9879639597